सद्गुरु तत्व बोध
SADGURU TATV BODH

नई दिल्ली — श्री साई शके : 29–30

अंक — 105 — मई — जून — 2011

Publisher
Sri Saikalp Adhyatm Sanstha
"Sai Niketan"
New Delhi - 110025
Ph. : 26956561
E.mail : saikalp@gmail.com
dadab6@gmail.com
Web : saishraddha-World.com

Patron
Lalita Bhavani Shankar Bhatte

Editorial
Vijay Kumar Varma
Jogesh Grover

Subscription
Inland
Yearly : Rs.100.00
Life time : Rs.500.00

Overseas
Yearly : US$ 50.00
Life time : US$ 200.00

Printed By
Shaarp Advertising
Cell : 09810284136

Published Every Month

©All rights reserved with Publisher

।। ऊँ श्री साईनाथाय नमः ।।

।। ऊँ श्री सद्गुरूनाथ दादाय नमः ।।

भाग–2

देह धारणा – ऋणानुबंध – विमोचन – दीक्षा – जीवन का सार्थक

आत्मा सेकड़ों साल, अनेक जनम लेकर उत्क्रांत होकर 19 माध्यम और आवश्यक कर्म की धारणा करके मानवी देह धारण करने के पात्र बनता है। अब उसे मानवी देह धारण करके प्राप्त हुए 19 माध्यमों का विकास कर के जीवन उत्पत्ति की मूलभूत कारण – "ब्रम्हाण्ड शक्ति को/ निराकार विश्व शक्ति को आकार देकर विश्व में समतोलत्व रखना, सुख–शांति–समाधान रखना" – यह कार्यान्वित करना होता है। प्राप्त हुआ हर एक जन्म में अपने माध्यमों का विकास करके उत्क्रांत होने के लिए होता है। लेकिन जन्म प्राप्त होने के बाद इस मूलभूत कारण का ज्ञान आज हमें (साधारण मानव को) नहीं हो रहा है। हम आज का जीवन, अपने जीवन के उत्तरार्द्ध की (बुढ़ापे की) या फिर अपने बाल–बच्चों की ऐहिक रूप के कारणों को पूरा करने के लिए व्यतीत करते हैं। लेकिन क्या हम अपने अगले जनम के (Next Birth) बारे में सोचते हैं ? हम सोचते हैं कि अगला जनम किसने देखा है, लेकिन फिर क्या हमने अपने जीवन का उत्तरार्द्ध (भविष्य) देखा है ? नहीं..... हम तो अपने चारों ओर जो बुजुर्ग लोग दिखते है, उनका जीवन देखकर हमारे अपने बुढ़ापे के बारे में सोचते है और उसकी ऐहिक तरतूद करने के लिए जुझते रहते है। ठीक उसी प्रकार क्या हमें अपने चारों ओर देखकर हमारे अगले जनम का खयाल आता है? क्या हम भगवान/ईश्वर को पूरे विश्वास से मानते हैं ? ईश्वर यह ऐसी शक्ति है जो सभी को समान रूप से दुआ देती है कोई पक्षपात नहीं करती। तो आज हमारे आसपास जिन अनेक लोगों के जीवन हम देखते हैं, क्या वह एक दूसरे के समान है ? नहीं! अगर ईश्वर है और वह सभी लोगों को समानता से दुआ दे रहा है तो कोई बच्चा गरीब घराने में पैदा होता है और मुश्किल में जिंदगी गुज़ारता है और उसी समय पर कोई अमीर घर में पैदा होकर आराम की जिन्दगी गुज़ारता है। तो यह विषमता क्यों ? भगवान तो किसी में भिन्नता नहीं करता, निसर्ग/विश्वशक्ति सभी को समानता से, सभी लोगों को आशीर्वाद देती है; फिर जीवन में यह भिन्नता क्यों है ? हमने क्या

किया है; या कब किया; किस वजह से हमें अच्छे घर में, खुद की उन्नत्ति करने के लिए जीवन प्राप्त हुआ है ? इसका ताल्लुक और कोई नहीं, अपना गत जन्म है। इसका मतलब आसपास जो मुश्किल में जीवन व्यतीत कर रहे हैं उनको देख कर हमें यह बोध लेना चाहिए कि हमारा अगला जनम, आज प्राप्त हुए जनम जैसा या इससे भी बेहतर हो। हमें अपने अगले जनम की तरतूद आज करनी जरूरी है। प्रत्येक जीव का प्राप्त हुआ हर एक जनम उत्क्रांत होने के लिए होता है। मतलब प्राप्त जनम में अपने गत जनम के कर्मों की पूणर्ता करके अगले जनम की तरतूद (पूर्णयाई) करना, और यह सम्भव होने के लिए हमारे 19 माध्यमों का विकास करते जाना, जिससे हम ईश्वर का कार्य कार्यान्वित करने के लायक बने, यही हम सभी के जीवन का कर्त्तव्य है। लेकिन आज कौन से कर्म करके गत जन्मों के कर्मों की पूर्णता होगी, इसका बोध हमें नहीं होता क्योंकि यह प्रेरणा समझने के लिए जो माध्यम आवश्यक है, मतलब सूक्ष्म देह, सूक्ष्म बुद्धि, सूक्ष्म मन, इनका विकास हमने किया ही नहीं। इसलिए मानव का जीवन उत्क्रांत होने के बदले आज अपक्रांत हो रहा है।

आज हमारा जीवन केवल ऐहिक सुखों के साधनों के पिछे भाग रहा है लेकिन शांति और समाधान से वंचित है। आत्मिक शक्ति कम होती जा रही है और सहनशीलता, श्रृद्धा कम होकर आत्म समर्पण करने की इच्छा बढ़ रही है। जीवन एक उलझे हुए धागे के जैसा हो गया है जिसकी शुरूआत और अंत नहीं मिल रहा है। जीवन का प्रवाह हो गया है, जिस तरफ जगह मिले उस तरफ बह रहा है, उसका कोई निश्चित ध्येय नहीं है। ऐसी परिथितियों को बदलने के लिए वं. दादाजी ने इस धरती पर परमात्मा अवतार कार्य किया। दिव्य पुण्य विभूतियों के मार्गदर्शन से ऐसा कार्य स्थापन किया जिससे मानव अपने कर्मों की पूर्णता ही नहीं तो अपने और अपने कुटुम्ब के अगले अनेक जनमों की तरतूद करके प्राप्त जीवन में ईश्वर का कार्य करे मतलब गुरू रूप बने, इस समिति के कार्य का सेवक बने। यह सम्भव होने के लिए गुरू शक्ति से हमारे ऐहिक माध्यम का विकास करके, ऋणानुबंध अनुकूल करके, दोषों का विमोचन करके, दीक्षाएँ संक्रमित करके, हमारे जीवन का मूलभूत कारण उदित करके उसे गुरू कृपा से कार्यान्वित किया। इन शब्दों का मतलब क्या है ? यह विचार क्या कभी हम करते हैं ?

ऋणानुबंध

मानव देह प्राप्त होने के बाद, मिलने वाला हर एक मनुष्य जन्म पाँच ऋणानुबंध के हिसाब से कार्यान्वित होता है। अगर ये पाँच ऋणानुबंध एक दुसरे से अनुकूल है तो सुख की निर्मिती होती है और अगर ये एक दूसरे से अनुकूल नहीं है तो दुःख का अनुभव आता है। हर एक मनुष्य में साधारणतः कोई एक ऋणानुबंध की तीव्रता औरों से ज्यादा होती है और उस हिसाब से उस मानव का जीवन व्यतीत होता है।

मानवी देह धारण करने से पहले या देह त्यागने के बाद आत्मा के साथ दो ऋणानुबंध रहते ही है, जन्म कर्म और जन्म जन्मान्तर। बाकि के तीन ऋणानुबंध (इतरेजन, मातृपितृ और देवादिक) मानवी देह धारण करने के बाद कार्याविन्त होते है।

ऋणानुबंध मतलब ऋणों का अनुबंध (ऋणों का Relation)

1. जन्म जन्मांतर ऋणानुबंध : इसमें जीव ने प्राथमिक अवस्था से अब तक लिये हुए हर एक योनी के हर एक जन्म का/कर्म का हिसाब रहता है। हमारे जीवन का मूलभूत कारण भी इसी ऋणानुबंध में होता है। प्राप्त हुआ हर एक जनम खुद को उत्क्रांत करने के लिए इस ऋणानुबंध के हिसाब से होता है। इस ऋणानुबंध का विकास करके अपने जनम के कारण को उदित करके कार्यान्वित करना यह हम सब का फर्ज है। लेकिन अंजान से, औरों के जीवन देख कर जब हम प्राप्त हुए जीवन को कोसते हैं और ऐसा विचार करते हैं कि "किसी दूसरी जगह जनम होता तो अच्छा होता", तब अनजाने में इस ऋणानुबंध में दोष धारण हो कर उससे इस जनम में और अगले जनम में अशांतता और असमाधान पैदा होता है। इसलिए प्राप्त हुए जनम के लिए ईश्वर का ऋण मानकर कर्त्तव्य करते हुए जीवन व्यतीत करना और अपने देह का विकास करना जरूरी होता है।

2. जन्मकर्म ऋणानुबंध : इसमें हमारे पिछले जनम का कर्म संचित रहता हैं, आज व्यतीत होने वाले जीवन पर इस ऋणानुबंध का काफी हद तक प्रभाव (Domination) रहता है। मानवी जीवन प्राप्त होते समय कहाँ जनम लेकर यह

ऋणानुबंध अनुकूल होकर मनुष्य देह का विकास कर सके, यह विचार आत्मा, सूक्ष्म देह और ईश्वर करता है। धरती पर जनम लेते समय जन्म जन्मांतर और जन्मकर्म का एक अनुकूल हिस्सा (पूण्य) खर्च होता है, जो प्राप्त जनम में अच्छा कर्म करके हमें भरना होता है। आज प्राप्त जीवन में, सच्चे माईने में, मिला हुआ सुख, अन्न, वस्त्र, निवारा अपनी जरूरत से ज्यादा होने के वावजूद जब हम औरों के जीवन को देखकर मोहित होते है और प्राप्त जीवन के लिए खुद को/ईश्वर को कोसते हैं तब इस ऋणानुबंध में दोष का निर्माण होता है।

इन दो ऋणानुबंध के अलावा बाकी तीन ऋणानुबंध मनुष्य जन्म प्राप्त करते समय धारण होते है। वह है ***मातृ–पितृ, इतरेजन और देवदेवादिक।***

3. मातृ–पितृ ऋणानुबंध : जीव को एक मानव देह छोड़ने के बाद दूसरा देह प्राप्त करने के लिए परलोक में उत्क्रांत होना पड़ता है। जिसके लिए साढे तीन सौ साल आवश्यक होते है। इतने सालों के बाद भी हमें अच्छे घर में जनम प्राप्त हो कि जिससे हमारी उन्नत्ति हो यह बात इतनी आसान नहीं है। इसीलिए जो माता–पिता हमें इस धरती पर आने का मौका देते है उनके ऋणों का ही सम्बन्ध मातृ–पितृ ऋणानुबंध में होता है। माता–पिता के प्रति आदरभाव व्यक्त करके, उनकी सेवा करके यह ऋणानुबंध अनुकूल होता है। अपने माता–पिता का एवं उनके समान बुजुर्ग व्यक्तियों का अनादर करके इस ऋणानुबंध में दोष पैदा होता है।

4. इतरेजन ऋणानुबंध : हमें जन्म प्राप्त होने के बाद माता–पिता के रिश्तेदार हमारे रिश्तेदार बन जाते है। हमारे सगे भाई–बहन, चाचा–चाची, मामा–मामी, मौसा–मौसी और दूर के भाई–बहन से लेकर हमारा मित्र परिवार, इत्यादी, इत्यादी लोगों की मदद, उनके उपकार हमें जीवन में लेने पड़ते हैं। उनको ध्यान में रखते हुए उनके प्रति आदरभाव व्यक्त करना, सभी से अच्छी तरह से व्यवहार रखना, इससे इस ऋणानुबंध को लाभ होता है। लोगों के प्रति बुरा व्यवहार और सबसे महत्वपूर्ण चीज यह कि कई बार जब हमारा कोई अच्छा दोस्त या रिश्तेदार किसी कारण से दूर चला जाता है, या रिश्ता टुटता है तो उसके साथ बिताए हुए अच्छे लम्हों के बजाय हम बुरी बातें याद करके उसे कोसते रहते हैं। इन चीज़ों से इतरेजन ऋणानुबंध में दोष पैदा होता है।

5. देवदेवादिक ऋणानुबंध : जनम प्राप्त होने के बाद, जिस धर्म में जनम प्राप्त हुआ है उसके अनुसार धर्माचरण करके, देवदैविक उपासना करके यह ऋणानुबंध प्राप्त होता है। इस ऋणानुबंध का कार्य तीन हिस्सों में होता है :

1. जनम लेते समय जो दो ऋणानुबंध की धारणा होती है, मतलब मातृ–पितृ और इतरेजन, इन दो ऋणानुबंध की प्रतिकूलता निकालकर उनको अनुकूल करना।
2. हमारे देह माध्यम का विकास करके जन्म कर्म ऋणानुबंध की धारणा यथोचित रूप से करना।
3. पाँचों ऋणानुबंध अनुकूल हो गए तो सुख–समाधान की निर्मिती हुई लेकिन ऐसे सुख का अनुभव लेना, क्या यही जीवन है ? तो हर एक जीव के देवदेवादिक ऋणानुबंध में कोई ऐसी चीज होती है कि जिसको कार्यान्वित करके वो अपना जीवन का कारण उदीत करे और जीवन का सार्थक करे। इसीलिए यह ऋणानुबंध महत्वपूर्ण है।

अपने खुद के या औरों के धर्म का अनादर करना, ईश्वर का या उसकी उपासना का अनादर करना इससे देवदवादिक ऋणानुबंध दोष धारण होता है।

इन पाँच ऋणानुबंधों से हर एक मानवी जीवन कार्यान्वित होता है। ऋणानुबंधों की तीव्रता के अनुसार उस व्यक्ति का बर्ताव व्यक्त होता है।

जिसका जन्मकर्म ऋणानुबंध प्रधान हो उसे पैसा कमाना, खाना–पीना, नए कपड़े, नई चीज़ें लेना इसमें ज्यादा रस (Intrest) रहता है। उन्हें ईश्वर उपासना, धर्माचरण, परोपकार इत्यादी में रस नहीं रहता।

जिसका मातृ–पितृ ऋणानुबंध प्रधान होता है उसे अपने खुद की चिंता से ज्यादा माता–पिता की आज्ञाके अनुसार आचरण करना होता है।

जिसका इतरेजन ऋणानुबंध प्रधान होता है, उसे मित्र, परिवार, समाज के लोग, उनकी समस्या इत्यादी में ज्याद रस होता है। वह खुद के/ कुटुम्ब के लिए नहीं तो बाहर अन्य लोगों के प्रति प्रेम ज्यादा होता है।

जिसका देवदेवादिक ऋणानुबंध प्रधान हो, उसे देवदेवातार्जन, जप–जाप्य, पोथी–पुराण पढ़ना इत्यादी में ज्यादा रस होता है।

जिसका जन्मजन्मांतर ऋणानुबंध प्रखर हो, उसे अपने जीवन का सार्थक करने में रस होता है। वे प्रपंच और परमार्थ भी पूरी आस्था से करते हैं और परिवार का कर्त्तव्य पूरा करके जीवन को सार्थक करने की कोशिश में रहते है।

इनमें देवदेवाधिक ऋणानुबंध की सहायता से हम मातृ–पितृ और इतरेजन ऋणानुबंध अनुकूल कर सकते है लेकिन जन्मकर्म और जन्मांतर के दोष निकालना, अपने कर्म में बदलाव करना ये देवदेवादिक उपासना से मुमकिन नहीं होता क्योंकि देवदेवादिक शक्ति का आह्वान और अधिष्ठान अधिकारी मानव ने किया है और यह शक्ति नैसर्गिक होने के वजह से कर्म का नैसर्गिक तत्व वे बदल नहीं सकती। इस देवदेवादिक शक्ति से लेकर अपने कर्म में हाथ डालकर उसे बदलने का (to modify) अनुकूल करने का अधिकार स्वयं ईश्वर को भी नहीं तो गुरू और सिर्फ गुरू को ही होता है।

विमोचन

पाँच ऋणानुबंधों के दोषों का निवारण करने का साधन श्री नवनाथों ने सिद्ध किया था; और श्री दत्त गुरू ने उसे सामर्थ्यवान बनाया था। वं. दादाजी ने श्री औदुंबर क्षेत्र की उपासना में इस साधन को प्राप्त किया और शास्त्र के अनुसार उसे कार्यान्वित करके, फिर उसे सौम्य करके वो ऊँकार साधना दैनंदीन प्रार्थना आरती और निराकरणों में सिद्ध करके स्थित किया। इस साधना का नाम है विमोचन। वं. दादाजी ने तीन विमोचन सिद्ध किए :

वंश विमोचन, कर्म विमोचन और ऋणमोचन

1. वंश विमाचन : पिछले कुछ सेकड़ों सालों से देवादिक उपासना शास्त्रोक्त पद्धत्तियों से न होने के कारण और दुनिया भौतिक प्रगति में गतिमान होने के वजह से इहलोक से गुजरे हुए लोगों की आत्मा को योग्य गति नहीं मिल पाई थी। यही देखकर पं. पूज्य हाजी मंलग बाबा ने वं. दादाजी को 1958 में यह मार्गदर्शन दिया कि जब तक इन आत्माओं को गती नहीं मिलेगी तब तक मानव का सुख–समाधान का अनुभव लेना बहुत मुश्किल है। इसीलिए वंश विमोचन साधन करना है। शास्त्र के अनुसार करने के लिए पूना में एक बुजुर्ग पंडित ने उनको बुलाकर यह कहा तो वे कहने लगे कि यह विधी सिर्फ तीर्थ क्षेत्र पर ही (प्रयाग, काशी) हो सकती है, मैनें चारों वेदों का पठन किया है और इसलिए दूसरा कोई रास्ता नहीं है। तब प. पूज्य हाजी मलंग बाबा ने ऋगवेद के पृष्ठ क्रंमाक और पंक्तियों की जानकारी देकर पढ़ कर आने के लिए कहा। वे बुजुर्ग पंडित दूसरे दिन आकर कहने लगे कि, "बताए हुई जगह पर ऐसा लिखा है कि अगर गुरूकृपा हो गई तो गुरू माध्यम की उपस्थिति में वंश विमोचन कोई भी जगह हो सकता है।" वे पंडित खुद मंलग गढ़ चढ़ कर पाँच साल वंश विमोचन का हवन कर रहे थे। आगे इक्कीस साल के उपासना से यह साधन सिद्ध किया और फिर सौम्य करके प्रार्थना, निराकरण आरती, साधना और प्रतिमा से कार्याविन्त किया।

2. कर्म विमोचन : वंश विमोचन से वातावरण की शुद्धता होने के बाद, हमारे वंश की गुजरी हुई पीढ़ीयों को मुक्तता और सद्गति देने के बाद हमारे जीवन में सुख–समाधान निर्माण करने के लिए हमारे ऋणानुबंध में धारण हुई प्रतिकूलता/दोषों का विमोचन करने के लिए कर्म विमोचन और ऋणमोचन यह साधन वं. दादाजी ने सिद्ध किए।

कर्म विमोचन से हमारे जन्मकर्म और जन्मजन्मांतर ऋणानुबंध में धारण हुई प्रतिकूलता निकाल दी थी, उसमें गुरूशक्ति से बदलाव (Modified) किया। इसका मतलब यह नहीं है कि अब हमारे जीवन में कोई संकट नहीं आएगा, तो इसका मतलब यह है कि जितना हमारा विश्वास/श्रृद्धा बढ़ेगी उतनी गुरूशक्ति की धारणा ज्यादा से ज्यादा होने से प्रतिकूल कर्म की तीव्रता कम होकर उस प्रतिकूलता को सहजता से सहन करने की ताकत गुरूकृपा से प्राप्त होगी और वह प्रतिकूलता धारण होते समय बगैर हमें तकलीफ दिये हमारा खुद का और समाज का भी उद्धार कर जाएगी।

3. ऋणमोचन : इस साधन से इतरेजन ऋणानुबंध की प्रतिकुलता निकाल के या उसमें बदलाव करके अनुकूल किया जाता है। हमारा जीवन सफल होने के लिए हम पर अगणित लोग असंख्य उपकार करते है। उन उपकारों का बदला अपकारों से न हो और गुरूकृपा से उस ऋण की पूर्णता होकर हमारा जीवन साकार करने के लिए यह साधन सिद्ध किया। हमारे परिवार में, रिश्तों में, समाज में बर्ताव करते समय हमारे आचार–विचार, उच्चार में अच्छा बदलाव होना, या उसके लिए प्रयत्न करन मतलब यह विमोचन कार्यावित्त हो रहा है।

कर्म विमोचन और ऋणविमोचन यह एक बार की प्रक्रिया नहीं है। साधन तो वं. दादाजी ने सिद्ध किया और हमारे जीवन में कार्यान्वित भी किया। इससे दोषों का निवारण हुआ और प्रतिकूलता में बदलाव होकर गुरू कृपा से अनुकुलता धारण हुई; लेकिन इस प्रतिकूलता के विषयों का (Impression) कर्म में रहता है। वह विषय जब कर्म के साथ धारण होता है उस वक्त गुरू शक्ति से और हमारे सद्–सद् विवेक बृद्धि से उस विषय को/विचार को रोकना/विसर्जित करना हमारा कर्त्तव्य है। अगर हमने यह नहीं किया तो वह विषय पूरी तरह धारण होकर प्रतिकूलता को आह्वान करता है और हमें तकलीफ और हमारे माध्यम से औरों को तकलीफ देता है। तब हमें ऐसा अनुभव आता है कि गुरूमार्ग में बीस साल हुए/तीस साल हुए लेकिन प्रगति नहीं हुई, आज भी हमें समाधान नहीं और हमारे बर्ताव से औरों को समाधान नहीं। इसलिए वह प्रतिकूल कर्म के विषय के Impression से आने वाले विचार (विकार) को रोकना हमारा परम् कर्त्तव्य है। इसी का मतलब है 'आचरण'। और अपने आचरण सही तरीके से हो रहा है या नहीं इसका अनुमान लगाने के लिए वं. दादाजी ने परमार्थ प्रश्नावली दी है। इससे हर रोज सोने से पहले हम अपने आचरण का अनुमान लगाते है वह असल में यह अभ्यास करना है कि आज के दिन हमारा कर्म विमोचन और ऋणमोचन कितना हुआ? कितने प्रतिकूल कर्म के विषयों के Impression से धारण हुए विकारों को आज हम रोक पाए। जितने रोक पाए उतना उस प्रतिकूल कर्म का पूरी तरह विमोचन हुआ। यह गुरू शक्ति से साध्य हुआ और इसका लाभ हमें खुद को तो हुआ ही लेकिन जिसके प्रति वह कर्म था/ऋण था उसे भी गुरू शक्ति का लाभ हमारे अंजाने में हुआ। जो विकार हम नहीं रोक पाए उससे प्रतिकूल कर्म धारण हुआ और उसने और एक प्रतिकूल कर्म हमारे बुरे बर्ताव से निर्माण किया। यह न होने के लिए 'परमार्थ प्रश्नावली'। इसीलिए पंत महाराज जी ने लिखा है "नको नको पुनरावृत्ति, अदव्य भजनी रमो वृत्ति।"

दीक्षा

विमोचन साधन वं. दादाजी ने श्री दत्त गुरू से और प. पू. नवनाथों से प्राप्त किया। यह श्री नवनाथों ने सिद्ध किया हुआ और श्री दत्त गुरू ने सामर्थ्यवान किया हुआ साधन है। वं. दादाजी को इसकी प्राप्ति श्री औदुबर क्षेत्र में साधना/तपःचर्या करके हुई और फिर इक्कीस साल शास्त्र अनुसार साधना करके उसे सिद्ध किया। आज भी हमारे जैसे सामान्य मानव को यह साधन का लाभ कोई भी प्रखर उपासना किए बिना आसानी से हो सके इसीलिए दिव्य पूज्य सूफी विभूतियों ने वं. दादाजी के माध्यम से उसे सौम्य करके कार्यान्वित किया। जैसे जैसे हमारे ऋणानुबंध की प्रतिकूलता विमोचित होती जायेगी वैसे वैसे, उस समय निर्माण होने वाली खाली जगह गुरू शक्ति से भरना अतिआवश्यक होना है, जिससे हमारे माध्यम का विकास होकर जनम का कारण उदीत हो और जीवन का सार्थक हो; इसीलिये वं. दादाजी ने गुरूशक्ति सौम्य करके उसे पाँच हिस्सों में कार्यान्वित किया/धारण करके दी। वह पाँच दीक्षा मतलब उपासना दीक्षा, नामःस्मरण दीक्षा, अनुग्रह दीक्षा, गुरू दीक्षा और कारण दीक्षा। यह पाँच दीक्षाएँ देते समय एक के बाद दूसरी, फिर तीसरी, ऐसे दी थी। हर एक दीक्षा का निश्चित काल, उसके लिए संकल्प प्रार्थना और निश्चित उपासना करके ली थी। सभी सिद्धता होने के बाद गुरूशक्ति का आह्वान करके श्री शक्तिपीठ की स्थापना की गई और प्रतिमाएँ देकर गुरूशक्ति को हम जेसे भक्तों के माध्यम में कार्यान्वित किया। इन प्रतिमाओं में विमोचन, दीक्षा, सभी सिद्धता समायी; जिससे सामान्य मानव को/किसी भी धर्म, पंथ या किसी भी योनी के जीव को आसानी से लाभ हो। यह गुरूशक्ति कार्यान्वित होने का साधन मतलब – कामकाज के निराकरण, आरती साधना, ऊँकार साधना और मुलाकात साधना।

उपासना दीक्षा, नामः स्मरण दीक्षा, अनुग्रह दीक्षा

जब हम पहली बार कार्य केन्द्र पर कोई कठिनाई की वजह से कामकाज के लिए आते है तभी जो गुरूशक्ति हमें प्रदान की जाती है, उससे तीन विमोचन और पहली तीन दीक्षाएँ हमारे जीवन में कार्यान्वित होने लगती है। इस गुरूशक्ति का लाभ केवल वह कठिनाई दूर करने के लिए नहीं दिया जाता और न ही कोई पारमार्थिक अवस्था की प्राप्ति हो इसलिए होता है; तो, जो निराकरण – प्रसाद पूजन, नामःस्मरण, उपासना इत्यादी दिया जाता है उससे क्या कार्य होता है ?

हमारे जीवन में आई हुई कठिनाई का जो मूलभूत कारण है, मतलब ऋणानुबंध की प्रतिकूलता उसे निवारण करने के लिए विमोचन साधन गुरूशक्ति से कार्यान्वित होता है। यह विमोचन हमारे विश्वास और श्रृद्धा पर निर्भर होता है। निराकरण में बतायी हुई उपासना या नामःस्मरण करने वाला हमारे देह इतना तैय्यार नहीं होता जिससे ऋणानुबंध की प्रतिकूलता दूर हो सके। इतनी ताकत हमारी नहीं होती इसीलिए गुरूशक्ति वह कार्य एक तरफ से अपने आप करती है। दी हुई उपासना, सेवा से हमें अपना माध्यम का विकास करना होता है। इसमें पहली तीन दीक्षाओं का कार्य होता है।

उपासना दीक्षा : इससे हमारे कुलधर्म, कुलाचार, कुलोपासना, देवी–देवताओं के प्रति कि गई उपासना जो शास्त्र अनुसार न होकर हमने अपने ज्ञान–अज्ञान से की उसे गुरू उपासना में जोड़कर निश्चित मार्गदर्शन से कार्यान्वित किया जाता है। इसीलिए शक्तिपीठ स्थापना के वक्त वं. दादाजी ने इस कार्य के लिए सभी देवी–देवताओं की अनुमति लेकर उनकी शक्ति गुरूशक्ति में समायी।

नामःस्मरण दीक्षा : इससे हमारे माध्यम का विकास हो इसलिए संकल्प प्रार्थना और नामःस्मरण सेवा सूचित किया जाता है।

अनुग्रह दीक्षा : इससे गुरूवलय धारण करके हमारा माध्यम – सूक्ष्म देह, गुरू शक्ति धारणा के लिए काबिल बनाया जाता है।

ऋणानुबंध के प्रतिकूलता का विमोचन गुरूशक्ति से होता रहता है। जीवन में कष्ट कितने उठाने हैं यह हमारे ऋणानुबंधों में प्रतिकूलता कितनी है और श्री गुरू पर हमारी श्रृद्धा कितनी है इस पर निर्भर है। लेकिन निराकरण बताते समय बताए हुए वक्त में पाँच से ग्याराह हफ्तों में ऋणानुबंधों की प्रतिकूलता गुरूशक्ति से विमोचित होकर शांति और समाधान की निर्मिती होगी यह सिद्धता इस कार्य में है। अगर हमें कभी ऐसा लगता है कि पाँच हफ्तों में शांति या समाधान नहीं है तो यह विचार करना आवश्यक है कि जो उपासना, सेवा करने के लिए बतायी वह कितने एकरूपता से की गई। हमारे माध्यमों का विकास उससे हो पाया होगा क्या ? जैसे हमें जुकाम हो गया तो खुशबू नहीं आती, बुखार हो गया तो मुँह का स्वाद चला जाता है फिर मनपंसद सब्जी है लेकिन हमेशा की तरह स्वाद नहीं आता; या आँखों में तकलीफ है तो सामने वाला चित्र साफ नहीं दिखता। असल में चित्र तो बिल्कूल साफ (clear) है, जो सब्जी बनाई है उसकी खुशबू भी अच्छी है और स्वाद भी अच्छा है लेकिन उनका अनुभव हमें जिस माध्यम से होता है वह माध्यम आज ठीक नहीं हैं वैसे ही जिस माध्यम से (सूक्ष्म देह से) हमें शांति और समाधान का अनुभव लेना है उस सूक्ष्म देह का विकास हमने कितना किया। पहली तीन दीक्षाएँ इसी की प्राप्ति करने के लिए है जिससे ऋणानुबंधों की अनुकूलता होकर उसे धारण करने लायक हमारे माध्यम का विकास हो।

इससे सुख–शांति–समाधान का अनुभव हमें आने लगता है और इस कार्य का लाभ हम लेना शुरू करते है। जितने हमारे आचार–विचार खुद के माध्यम का विकास करने के लिए पोषक होते है उतनी जल्दी दीक्षा कार्यान्वित होती है।

इस प्रकार इस समिति के कार्य का लाभ नियमित रूप से कुछ समय तक लेने के बाद प्रापंचिक कर्त्तव्य पूर्णता करते समय गुरूशक्ति सुख–शांति–समाधान का अनुभव देती रहती है और फिर ऐसा बोध होता है कि सच्चा समाधान भौतिक सुखों के साधनों में नहीं तो सद्गुरू कृपा प्राप्त करने में है। तब गुरूकृपा से हमारे माध्यम का उपयोग गुरू मार्ग में अंशतः स्वरूप में हो ऐसा बोध होने लगता है तभी चौथी दीक्षा – गुरू दीक्षा – कार्यान्वित होने लगती है।

गुरू दीक्षा

इसमें सद्गुरू कृपा मतलब गुरूशक्ति और गुरूशक्ति की धारणा यह जीवन का प्रमुख विषय बनता है। काया–वाचा–मनसे उपासना होने लगती है। जो मन, पहले उपसना करते समय हमेशा अन्य विषयों के आधीन रहता था, वह अब काबू में रहने लगता है। कर्माधीन अवस्था से कर्म – आधीन अवस्था प्राप्त होती है। मतलब हमारा जीवन जो कर्म की गतिनुसार, ऋणानुबंध की पूर्णता करने के लिए व्यतीत हो रहा था, वह जीवन, ऋणानुबंध अनुकूल होकर उनकी धारणा होने के बाद, गुरूकृपा से कर्म को खुद की उन्नत्ति के लिए आधीन करता है। मतलब इस अवस्था में अगर जीवन में कोई सद्कर्म प्रवाहित होने वाले है, तो उसका लाभ कोई भौतिक सुख लेने के लिए नहीं, तो गुरूकृपा से खुद के माध्यम की उन्नत्ति करने के लिए प्रवाहित होता हे। उसी प्रकार अगर कर्म में कोई प्रतिकूलता बाकी है (विमोचन के बाद) तो वह भी गुरूकृपा से खुद की उन्नत्ति के लिए जीवन में कार्यान्वित होती है। मतलब जीवन में धारण होने वाला अपना कर्म गुरूकृपा के आधीन हो जाता है उसी को कर्म–आधीन अवस्थ कहते हैं।

कारण दीक्षा :

गुरूकृपा से, इस दीक्षा से हमारे जीवन का कारण उदीत होता है और फिर हमारे माध्यम लोक कल्याण करने के लिए मध्यस्त बनता है। तब गुरूकृपा से, गुरूपात्र होना (Healing), कृपाशिर्वाद धारण करना (Trance), लोगों की तकलीफों के लिए उनको मार्गदर्शन करना (Clair voyance &clairaudience) यह अवस्था प्राप्त होती है।

इसके आगे, महाकारण अवस्था में काया–वाचा–मन – गुरूशक्ति – आत्मिक शक्ति – देहिक शक्ति और पंचतत्व एकरूप हो जाता है और जीवन गुरूतत्व के आधीन हो जाता है। तब जीवन, कर्म या ऋणानुबंधों से नहीं बल्कि धर्म और गुरूकृपा से मतलब गुरूशक्ति से कार्यान्वित होता है। इस अवस्था में जगत्कल्याण के लिए क्या करना है यह प्रेरणा गुरू देते रहते है और अपने माध्यम से गुरूकार्य करते है। जब वं. दादाजी ने कारण दीक्षा दी थी तब बताया था कि "मुझे भी नहीं पता कि मैनें तुम्हे क्या दिया और तुम्हें क्या प्राप्त हुआ।" इसका एक अर्थ यह है कि, यह कारण दीक्षा इतनी व्यापक है कि जब हमारा माध्यम तैय्यार हो जायेगा तब दुनिया को जिस चीज की आवश्यकता है, वही दुआ, गुरूशक्ति से हमारे माध्यम से कार्यान्वित होगी। इसीलिए 'क्या दिया'? मतलब 'क्या नहीं दिया?' दिया तो सभी है, लेकिन क्या प्राप्त हुआ?' यह उस पर निर्भर करता है कि कब अपना माध्यम इस दीक्षा के लिए तैय्यार हो जाएगा, तभी जो आवश्यक होगा वह धारणा होगी और कार्यान्वित होगा। इसीलिए वह बताना मुश्किल था कि क्या दिया और क्या प्राप्त हुआ।

इसीलिए एक सेमिनार में वं. दादाजी ने कहा था कि इस कार्य का एक ब्रह्म वाक्य है जिसे हमेंशा ध्यान में रखना, फिर पाँच बार सभी लोगों से वह वाक्य को दोहराया। ब्रह्म वाक्य, जो प. पूज्य साईबाबा ने वं. दादाजी को इस कार्य के आरम्भ में बातया था कि, "तुम सेवक बन जाओ, 'सेवेकरी' तुम्हें अपने आप मिलेगें।" यह इस अवस्था का वर्णन है कि कारण दीक्षा प्राप्त करके सेवक बन गए तो 'सेवेकरी' मतलब भक्त नहीं, तो उस सेवक माध्यम से सेवा कर लेने वाली विभूतियाँ और देव–देवता। वह विभूति और देव–देवता अपने आप आकर मार्गदर्शन करेंगे। वे तो इंतजार कर रहे हैं कि कब हमारे माध्यम से कार्य करने का मौका उन्हें मिले लेकिन उसके लिए हमारी तैय्यारी होनी जरूरी है। अब अपने देह का विकास करना है।

इस कार्य का लाभ लेने के लिए आए तब जीवन का मायना पता नहीं था। जीवन का प्रवाह बन कर जहाँ जगह मिले उस तरफ बह रहा था। सुख–शांति–समाधान का पता नहीं था। आज श्री गुरूकृपा से अपने जीवन का निश्चित ध्येय पता चल गया। जीवन का 'प्रवाह' से 'प्रवास' बन गया, यह प्रवास करके नदी को सागर में मिलना है यह निश्चित हो गया ओर उसका रास्ता बताने के लिए जीवन में गुरू का अधिष्ठान निश्चित हो गया, ऐसे गुरू, जिन्होंने हमारा जीवन साकार करने के लिए खुद का बलिदान दे दिया, समाधि ले ली। ऐसे हमारे श्री गुरू वं. दादाजी और गुरू के गुरू 'श्री साईनाथ महाराज'। जीवन का 'प्रवास' होकर उसकी नदी हुई वो गोदावरी और ऐसे जीवन में गुरू का अधिष्ठान मतलब – गोदावरी के तीर पर (तट पर) *"पवित्र तीर्थ शिरडी", "घेतली समाधि साईनाथ"*। *"वाकवंटी गावी मागुनी भाकर"* – कोई मूर्तिकार, मूर्ति बनाने से पहले जैसे मिट्टी को कई बार छान लेता है, कि कोई छोटा–सा भी पत्थर गलती से न आ जाए,

वैसे ही श्री गुरू जी ने हमारे माध्यम को आकार देने के लिए जीवन की मिट्टी का विमोचन करके उसे (desert) वाकवंट बना दिया जिससे अब कोई भी दोष (पत्थर) जीवन में नहीं है और आगे की उन्नत्ति के लिए अन्नमय कोश से शुरूआत कर दी ("मागुनी भाकर")।

*"चिलिम, चिंघी, कफनी शोभे अलंकार, वसती छुपोनी दत्त अवतार ....."*हम इस कार्य में अपनी कठिनाई दूर करने आये थे। हमें अपने जीवन को सार्थक करने का खयाल नहीं था। लेकिन श्री गुरू ने हमारा विमोचन करके गुरू बीज धारणा करके दिया कि जो छुप के बैठा है, हमारा विकास होने की प्रतिक्षा कर रहा है। वह गुरू बीज कैसा है तो पारमार्थिक शक्ति का अलंकार जिसके पास है, ऐसा त्रिगुणात्मक शक्ति का दत्त अवतार है।

"लिंबवृक्षाखाली लाविती ते ध्यान" – हमारा जीवन जो एक कड़वे निंब वृक्ष (निंबू का पेड़) जैसा है, उसके निचे, उसको साकार करने के लिए श्री गुरू ध्यान लगाए बैठे है।

"मशिदीत धुंद धुनी पेटवून, त्रिगुण तत्व झाले भू वरी साकार" – श्री गुरू हमारे माध्यम का विकास होने की राह देख रहे हैं कि उन्हें हमारे माध्यम से कुछ कार्य करने को मिले। हमें उसका ख्याल नहीं है, लेकिन हमारे आत्मतत्व में दीक्षा रूपी धुनी जला कर वह धुंद हो गए है क्योंकि उनको भरोसा है कि त्रिगुण तत्व इस माध्यम से आज नहीं तो कल कार्यान्वित होगा।

"चावडीत बांधे दोरा, फली दीड़ हात, लोक म्हणती निजती साई योग समाधीत" हम जब जनम को आए तो यह देह डेढ़ हात की फली उतना था। जब बड़े होते गए तो जीवन में कठिनाइयाँ आयी और लोगों के अनुभव सुने और ऐसे लगने लगा कि शायद ईश्वर, साईबाबा योग समाधि में सो गए। लेकिन फिर यह गुरूमार्ग का लाभ हुआ और श्री गुरू ने जीवन के दोषों का विमोचन किया, गुरूशक्ति दीक्षा द्वारा संक्रमित की गई और अब पता चला कि, *"झोप कैसे, जागे बाबा भक्त हृदयात"* – बाबा को नींद कैसी, वे तो कितने समय से राह देख रहे हैं कि एक बार हमारे माध्यम का विकास हो जाए और वह कुछ गुरूकार्य आगे कर पायें।

।। शुभं भवतु ।।

जनम जनम के सेवक

श्री साईकल्प आध्यात्म संस्था

विनम्र निवेदन

अति हर्ष के साथ आप सभी गुरुबंधु एवं भगिनियों को सूचित किया जाता है कि मासिक पत्रिका "तत्व बोध" का आगामी अंक एवं अन्य सूचना वेबसाइट पर एवं मेल द्वारा प्रेषित की जाएगी।

अतः आप सभी गुरुबंधु एवं भगिनियों से अनुरोध है कि आप सभी अपना ई–मेल पता एवं अन्य जानकारी यथाशिघ्र निम्न पते पर प्रेषित करें :

Sri Saikalp Adhyatm Sanstha

"Sai Niketan"

5, Jasola Vihar, New Delhi - 110025 Telephone : 26955261

E-mail : saikalp@gmail.com dadab6@mail.com

Please send your yearly subscriptions as early as possible